पसायदान

दिव्य कृपा का प्रसाद

‘पसायदान,’ यानी “दिव्य कृपा का प्रसाद,” वह शीर्षक है जो १३वीं शताब्दी के सन्त-कवि ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लिखित ‘श्रीभगवद्गीता’ की टीका के अन्तिम नौ श्लोकों को दिया गया है।

पसायदान, एक सुन्दर प्रार्थना है जिसमें ज्ञानेश्वर महाराज समस्त मानव-जाति के उत्थान व हित के लिए अपने श्रीगुरु के आशीर्वादों का आवाहन करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि धर्म का सूर्य तेजस्विता के साथ जगमगाए और संसार में शान्ति व सौहार्द लाए।

ज्ञानेश्वर महाराज, भारत के सबसे पूजनीय सन्तों में से एक हैं। उन्होंने अपनी टीका, ज्ञानेश्वरी की रचना महाराष्ट्र राज्य की स्थानीय भाषा, मराठी में करके कई लोगों को ‘श्रीभगवद्गीता’ का ज्ञान प्रदान किया। वे मात्र पन्द्रह वर्ष के थे जब उन्होंने ‘ज्ञानेश्वरी’ का लेखन आरम्भ किया और उन्होंने इक्कीस वर्ष की आयु में समाधि ले ली।

पसायदान

श्लोक १

विश्वात्मा इस वाग्यज्ञ [शब्द रूपी यज्ञ] से सन्तुष्ट होकर मुझे अपनी कृपा प्रदान करें।

श्लोक २

पापीजन अब पापकर्म न करें, सत्कर्म करने में उनकी रति [इच्छा] बढ़े, और समस्त प्राणी परस्पर मैत्रीभाव से, सामंजस्य से रहें।

श्लोक ३

पापों का अन्धकार नष्ट हो, इस विश्व को धर्म के सूर्योदय के दर्शन हों, और समस्त प्रणियों की जो-जो कामनाएँ हों, वे सब पूर्ण हों।

श्लोक ४

सभी जन ईश्वरनिष्ठ सन्तों की संगति में रहें, जो सभी पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करेंगे।

श्लोक ५

ये सन्त कल्पवृक्षों से भरे, चलते-फिरते उपवन हैं, और ये चिन्तामणि के चैतन्य ग्राम हैं। उनके वचन अमृत के सागर के समान हैं।

श्लोक ६

ये सन्तजन कलंकहीन चन्द्रमा हैं, तापहीन सूर्य हैं। ये सन्तजन सदैव सभी लोगों के स्वजन बने रहें।

श्लोक ७

इतना ही नहीं, सभी लोकों के सभी प्राणी, सर्वसुख से परिपूर्ण हों और वे आदिपुरुष को, ईश्वर को अखण्डरूप से भजते रहें।

श्लोक ८

यह ज्ञानेश्वरी ग्रन्थ जिन लोगों के लिए उनके प्राण ही है, उन्हें इस लोक में तथा परलोक में विजय प्राप्त हो।

श्लोक ९

तब श्रीविश्वेश्वर, सद्गुरु निवृत्तिनाथ ने कहा —“यह प्रसाद तुम्हें दिया जाता है।” इससे ज्ञानदेव को अत्यन्त सुखानुभूति हुई।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।